

ॐ नमः श्रीवज्रसूत्राय ॥ ॐ नमः श्रीवज्रसूत्राय ॥
 आगरुचव मालमप ॥ अष्टांगार्चनकनकमणिमय नानात्रत्ना
 प्रकालिना २ चरुच दीपसंगम मध्वमनुमाभ श्रीवज्रसूत्रगुणविजयिष्या २
 सुमनुकांचनमशिकियनसयना हास्कचसूत्रविजाजिना २ श्रीगुणलहास्क
 चसदृष्टा नाथानलमशुलनिर्यागयामि २ प्रथममन्त्र श्रीगुणमशुलनअविना
 चवधक मल्लिलेधिया २ यकाचजानपूर्वविदहा यकाचजान आम्हा दीप २ य
 पचगा अवधि वं उरुव कृद्व विविभिन्नसंप्रथ २ या उप दीप चा उप दी

अष्टांगार्चन

द्विप

प. लाउप द्योप. बाउप द्योप. गजचक्रना. प्रवचनना. अथचक्रना. शोचनना. ख
अचक्रना. मशोचनना. चक्रचक्रना. वासविनिधानसमर्थ ॥
चागपमेकलि ॥ नालमा ० ॥ अनीलअनलजलजोरुनेमा मः भवमथलवक्रवा
या २ वक्रपंजले ठालजालसयलाः पयिरुदिहववजाया २ उमाचक्रवयीया ॥
॥ ॥ ॥ अथकवृथा आलिंगगथ हववजयिया वक्रवाजाही आलिंगगथसेवच
क्रयिया २ क्रुडिसंबीच बीचध्वज ऊहि २ नहि २ अष्ट ॥ ॥ अनेहनसवेदव
वक्रपाउ अदिगमचक्रिवयचसंराव ॥ छिडुवनकुसुमं कृतायहरादा ॥ छिडुव

श्री

तुक्र

ननुकवीचा २ छिडुवननवननाट अथचक्रनादः कलिंगवागकाकाया ॥ अहिनी ३
थीसहुच वीलेहुचाग आदिगवा खवअलाव २ अचामचक्रवयवधनेन मा
चनलयमाचगगनसंराव उमाचक्रवयीया ॥ ॥ ॥
चागलववी ॥ नालइजमोन ॥ कल अचनविधि पंचापहाचा पूजयामिरुदव
गथा २ विविधिउपहाचन लगीनवचउमच यथा धनिसुमंगला ॥ उं वज्रामका
दकमन्दाकिनीसमरावक अदयचपं ॥ ॥ ग. अ. अ. सुवलि श्री लक्ष्मी महाका

कल

ल उं स प्रो निष्ठि न व कु स्वा हा ॥ ॐ ॥ कनक वृष्य मथि च न न चि नु य ३४ प ५
पे त्व वे उ प आ रि ना २ पंचामर पंचचननः पंचोषधिः पंचवह्निनी ॥ ॐ ॥
जा जो अ क्र न इ वो कू २३ सहि ना न जा चार्य मनु न्या मा २ जा कि नी चा मा ख ३४ चा हा
चू पि शी वी च वी च ३४ च सं यु क्ता ॥ ॐ ॥ म क रु च च च श क ल आ र्च न नः अ रि
मं रु मू ख रु ल दा रु क्क हा न मो हं २ प्र उ अ ख श म ३ ला का च ह्ना न रु क्क च वा ह
ॐ ॥ ॐ ॥ ॥ जा ग व सं नः ल ल न चा ग ॥ इ र्ज मा न ना
च ॥ कं रु नी ल हां ज पंच ह्ना न रु ल वाः कं का ल सं क्र प वी ज मृ त्यु ना १ नि वा सि

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

न म हा का ल रु व मा म की मृ च सं द जी न व जी रु ना ॥ न मा मि द वो वा च शी ल मीः
व जा न्म रु ष क अ म्ना द क २ आ लि ट प द (अ प्र रु धि मा स न स्थि नः म क मू ख डि
न य न अ च श व र्णः २ अ र्द ह वा ह्ना चि ना द कः क व वा च अ च क्र प द्वि ती य क ल २
पा ठा क्क अ ख इ चः ध र्ज ग ज य ३४ व च द क प्र थ म स र्व अ प उ र्ध्व उं ज रु ट क ध न
व कु वं ध ख द्वां ग क म ३४ ल २ डि व म् रु द्र च व कु वा न ग न या नि न द न क मी रु च २
हं ह हा जीं ह का व ह च न व र्णः रु क्क अ म्ना का च ला व य नि २ न व क च श म य रु षा
मे ज वा च शी च ज ना य व कु न्द्र न आ ध्या य न्क ॥ ॐ ॥ ॥ ॥

सिद्धि वरु ७

येया हव्वनु हव्व ॥ ॐ ॥ सुदु च च अशिलंगन धिया २ रुनकि
वाक वज्रमलान सुच पिशी ॥ ॐ ॥ ॥ ॥
मग केरु ॥ मालखदं काले ॥ हविमवर्शे छिनयश सुन्दरी नवजीरुभा जाव
न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ सुकदवी मामकी वापुशी दवी ॥ अष्टाद वज्रुजारु लननुः
किपेश ॥ पंच बुद्ध स्वपूयाः सुक जागिनी ध्वजी ॥ ॐ ॥ हकावशे हचन व
शे हाकायगन्धनागने २ कां काचवीर्य हमाच ॥ अमना कायनु लाव धन ॥ ॐ
सुदु च च अशिलंगन धिया २ रुनकि सिद्धि वज्र वजा वाय्येगीना ॥

सिद्धि वरु ७

॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ वागगन्ध वरेववी ॥ माल मप ॥ ॥
सुकदने पंचकान स्वपू २ पंचमिया वसु पंचकालि पूजिया ॥ ॐ ॥
सुकदवे बलिजाया ॥ छिनुवन थीन २ वीचमे वा पक समयानन्द ॥ ॐ ॥
वीचवीच ध्वज समयानन्द २ कनक जाव रु हृदयानन्द ॥ ॐ ॥
पंच बुद्ध ^{पंचकान} पू २ दवा सुवन च प्रमोदि न हृदया ॥ ॐ ॥
ॐ आ ॥ हं खे ऊं ॥ धन कवि न २ उमचू घष्ठा धनि विप्रमानः
॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पञ्चमस्कन्धः

१०
सिद्धि

जागपप्रज्जलि ॥ गालमा ० ॥ पञ्चमहापाठसमयवाचीजुवस्थान २ द्वादिग
दधवलआजोश्रिया २ समयाज्ञानन्दरुवनिहोयि ॥ ५ ॥ वीजवीजठ
चवायिपानमश्लमाहनिविध्वरुलियाकालचक्र २ हवजुकायविध्वरुलि
यायागयागिनीनहंकाजावलिदानदेवी २ दानपरियाविघ्ननिवालय ॥ मे
थीसंवयमाभमजियाविध्वजननी २ समयाज्ञानन्दरुवनिहोयि ॥
॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ जागेनाटक ॥ गालद्रुजमान ॥ हानम
श्लमाभमामकीदेवी २ आलिकालिद्वयिचापयिहज्रवे ॥ नमामि २ थीमा

अंविः

मकीदवी श्री ठिठुवननाथ ॥ ५ ॥ संपूर्ण अमृतकृष्ण जगन्नाथान ॥
 ॥ ५ ॥ चक्रवर्त्त चतुर्वर्ग श्रीशिलाचनः विष्णु कलिभार्जवचनमनायन
 ॥ ५ ॥ डाकिनीनामाखशजाह्नपिथोः चतुर्दंवी कीर्तनविला ॥
 ॥ ५ ॥ हृषिकेश षट्मडाहृष्टिसंवीज ॥ ५ ॥ २ कनयि अनूपमवकुमाम
 कीर्तना ॥ ५ ॥ ॥ गन्धर्वहर्षनिजाग ॥ उर्जमाननाथ
 नमः ॥ आकाशशयनधनुः स्वच्छसितलउचाशयन ॥ ५ ॥ ननाहः
 ननाहः ननाननहः धवनसुअखिनीदहधनुः ॥ सजदसुआरियकाचशयन ॥

नामः ४८

विष्णु २

ॐ ॥ हे दआलिंगश याग धनः वज्रघट्ट मडा लय मूर्ति ॥ ॐ ॥
मायाविद हजीन ऊगुः साहय वज्रसत्त्व पञ्चम ध्वज ॥ ॐ ॥
मधुमनवाग ॥ इजमान माय ॥ ॥ विचक्र चवि विमिश्र लमाज स्थिति आः
नन्द मूर्ति धवा २ वज्रवाचा ही आलिंगश सम्पन्नाना च विमिश्र कला ॥ नना हू
हू नना हू हू नना नन हू हू हू ॥ नीलवर्ण चतुर्वक्त्र प्रमिस्र खनिनः पञ्चगुण
आनन्द मूर्ति धवा ॥ विष्णु वज्र ऊर्ध्व चतुर्भुज मकूट धवाः हाव आरुचय त
पिना ॥ वज्रघट्ट गजवर्म उमच खट्वाग धज वीरमानन्द मूर्ति धवा ॥ कचः

विष्णु २

निकपाल पञ्च गु पा अ धनः विष्णु लव कृष्ण धवा ॥ दिगं विदिगं काकासा
दि जमदादिया ॥ सहजानन्द मूर्ति धवा नमामि २ श्रीचक्र संवत्सु च
वच श आ जा धिया ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जागसु प्रमिस्र नाटक ॥ नाल चक्र धवा ॥ हिदल संचा च्चो दिन कच मश्ल च
जिक विठुवन जननी २ चक्र कर्ण उच विष्णु यन माय चतुर्भुज गश छदनी ॥ देवी
कर्ण कपाल धवा ॥ ॐ ॥ हृषिक नच विष्णु माला २ कमल कूल अ इयिना
चवा ऊयि ना चयि सहज मूर्ति धवा ॥ ॐ ॥ चोक्र विष्णु कर्ण केशुल कर्ण

क०॥ २ ॥ हा० ॥ च० ॥ क० ॥ या० ॥ उ० ॥ भ० ॥ ख० ॥ ल० ॥ च० ॥ श० ॥ ना० ॥ प्र० ॥ च० ॥ रूप० ॥ श्री ॥ ॥ ध्रु ॥ ॥ ह० ॥ व० ॥
पद० ॥ पान० ॥ न० ॥ ज० ॥ ध० ॥ ज० ॥ न० ॥ रा० ॥ हि० ॥ नी० ॥ क० ॥ न० ॥ क० ॥ जा० ॥ या० ॥ २ ॥ हा० ॥ वा० ॥ हा० ॥ व० ॥ वि० ॥ वि० ॥ र्जि० ॥ न० ॥ अ० ॥ न० ॥ न० ॥ ज० ॥
सि० ॥ द्वि० ॥ प्र० ॥ भा० ॥ क० ॥ य० ॥ श्री ॥ २ ॥ प्र० ॥ श० ॥ मा० ॥ मि० ॥ श्री० ॥ व० ॥ ज० ॥ या० ॥ गि० ॥ नी० ॥ ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जा० ॥ ग० ॥ मा० ॥ न० ॥ ॥ न० ॥ मा० ॥ ॥ ॥ ॥ दि० ॥ उ० ॥ उ० ॥ श० ॥ क० ॥ मू० ख० पी० न० व० द० नी० ॥ न० ग० श० म० कू० ट० क० ॥
हि० न० य० श्री ॥ न० मा० मि० श्री० ने० जा० त्मा० द० वी० जि० उ० व० न० ऊ० न० नी० ॥ ॥ ध्रु ॥ ॥ वि० श्रु० व० न०
व्या० पि० नी० जि० न० क० न० दा० य० श्री ॥ द० हि० न० क० ज० नि० व० ज० ॥ च० लु० मा० ज० म० र्द० नी० ॥ २ ॥ वा० म०
क० जा० ट० क० वि० जा० सि० न० द० ध० न० ॥ प्र० श० मा० मि० ने० जा० त्मा० द० वी० सृ० ज० न० ज० पू० जि० ना० ॥ २ ॥ स० क० ल०

मृद्विमृद्विदोहममाना ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नागकद्रु ॥ मालमा ॥ ॥ अयं वस्त्रलिदवीचूवदवीधन ॥ सयचसूत्रासूत्र
 वान्दकवच ॥ नरुगवनिपादकमलनेहिमृद्वि न नायचचमूनकाया. होउमवचन.
 आरुचअविरुषिना. नायचघ ॥ उवाचा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सिमिन्दुवधाचिकंजनुनयना ॥ ककुचिकर्पुचरुनायका म्वजा ॥ ५ ॥
 कार्ककपालधाचिमू ॥ मालारुषिना. सुन्धखडागकपालधाचिना ॥ ५ ॥
 रुनायसूत्रनवकुवाडलिदा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जागकः ॥ मालमा ॥ ॥ ऊयं वं लिदवीचूवदवीधवः ॥ सयचं सूचासूच
वादि नववः ॥ न रुगवनिपादकमलनेहि मठि न नापूचयः मूनकाया. होउमवयन.
आरुचशविरूपिना नापूचयः ॥ उवाचा ॥ श्रीशिरुनयन नयन नना ॥ सिचः
सिमिन्द्रवाचिकं ऊन नयना ॥ ककुचि कपूच रुनायना म्वजा ॥ ॥
कार्क कपालवाचिमू ॥ मालारूपिनाः सुखखङ्गाग कपालवाचिना ॥ ॥
रुनायसूचनवकुवाहलिदा ॥ ॥ श्रीवज्रयोगिशोवजदप्रसाद ॥ ॥

महानसमयवक्र

नीलकण्ठ १३

चागपयंजलि ॥ मालमा ० ॥ मथल समय चक्र मथल संपूर्ण २ दाद भुजु
 चउचावयन ॥ ॐ ॥ जाननु कवथाः श्रीसुवच योगिनो २ श्रीयावहुला
 देवी अवनायुथो ॥ जकिनी जामारव २ बाहादुरपेशो २ चापि माय चउ चापियो
 च ॥ कायवाकचिह्न विमिडुवन २ दानपानिया अरु अव नायुथो या यागया
 गिनी मवि या समवसंताव २ अष्ट भान श्रीरुचव जाया ॥ ॐ ॥
 चागक ॥ मालखदं काय ॥ ॥ नीलकं काय प्रकालिकि व २ उर्ध्वपिंगल
 कं श्री हवजु जाया ॥ जगन्मा कं काय श्रीनेवात्मा देवी ॥ नीलवर्ण देवी कजोम

कपालभावी ॥ ॐ ॥ काका विजरी कजालिगधममाधि २ पाउ भुजु का कजाटक
 धिया ॥ ॐ ॥ ललाविरुषि कषट् मूडारुच २ व्याघ्रचर्मपचहिननजाभि
 यमाला ॥ ॐ ॥ बुद्धो महे श्वचना जाय शरु २ चापयि चउ चापश च
 रुमाचमईना ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥
 चागक ॥ मालखदं काय ॥ ॥ अर्वागिनि हिनाः वामजानुसर्व खड्ग
 किवथा मालसंतासाः चागदपमा हवदिजपा थाः किडुवन जाया अचलवीह
 जा ॥ ॐ ॥ नेमांमि श्रीच २ महाजोषम जानमसू हनिछुदिमा ॥ अग्निहीव
 विष्णुनाथि ॥ चापि किववि कसमडा कोमजा ॥ चागमसू राने छुदिमा ॥

अष्टविधि ११

[illegible]

नमामि श्री श्री महामंरु श्री सकल शिवाय सुमगुच ॥ कुमनिद हन कानवच
 यदः सर्व काननिधिसागवा ॥ प्रथम कच इय धादिन वजु यथ मडा मापिंग
 धाजाजिनो २ दिनीय कृणधन नीय कानरुध चरुपेखन सम कचधवा
 ॥ उरुय कुजपा धा उवनधम चापच रुधे वामधन पुरुका ॥ प्रलम कटमि
 ल प्र कालिन किलिप मधरु जचिववा ॥ निर्वादि ब्रदि हाथि निर्मिन रुनिना
 सर्व काननिधिरुव यदागा ॥ उरु धाच धाच मार्गन पच गाद्य वजु रु
 जमनि ॥ धर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उदित कुवन १५

जाग पद्य जलि ॥ नालमा ० ॥ ॥ उदित कुवन क मला मन कि ज अ ललि
 न पवन दान आहा ॥ निर्मल रुदय कच धा मय नाथा २ दहिम अरुय प्र
 दाना ॥ धर ॥ रुद्र देव रुद्रा रुद्रा धाच धा ॥ रुद्रुवन व्यापिन जगन उध
 प्रिया २ यशमामि वृगमला क धा ॥ कनक चलम शिहा जीव रुषिनः कनक
 सुखव रुधा ॥ वाम कच धा वचद आरुय धाः सहजानन्द मयूनि २ सचनच
 येक किनच गंश पूजिका ॥ ललाट वच धा सिलंगन धा प्रिया ॥ निमिज धाच
 धा मा क प्रदानाः दर्शन पाप दूख हय धा ॥ चक्रवर्ध मूरवनयन सुलाच

वक्रवदन २०

ना सर्वलक्षणसंपूर्ण चतुर्भुजविनष्टुत आचिलाकध्वजाः मर्ममथल उ
वनविजयि ॥ ५२ ॥ ॥ जगमालव ॥ नालमा ० ॥ ॥
चक्रवदनचक्रमुखविनष्टादिभुजाः दहिन उजगदा हस्तमश्वीचक्र ॥
॥ ५२ ॥ नमामि श्रीभीममनपत्रमध्वजा ॥ बाभ्रुजालयमूढाभय प्रभा
लीयजगन्मनावांश्चासिद्धिरुल्लसद्दोहमः पंचपाशवसाहिन इषोक्तिसुन्दरी
देवी ॥ अर्धलारूपं प्रायशुभमंगलाः सकृद्युच्यते अपसादसिद्धिम
॥ हावा हाव चक्र एहीमचाजनमामिः पद्मेनालगिचिह्नवक्त्रा इवाः

गजमुख २१

चार्य ॥ अमृतहृदयविचित्रश्रीमगीर्ण ॥ यनसकचक्षुसर्वलारुसिद्धि
रुवकुम्भ ॥ ५३ ॥ ॥ जगधनाथी ॥ नालद्रुजमान ॥ ॥
गजमुखविनयननाश्वपत्रवननन्याधिपतिगलध्वजा हलमशि
मकृच्छ्रलारुवशा नचशि कीलनसंकोठा ॥ ५३ ॥ मालियाविघ्नमायि
यादयः मायिमादृशविदाय ॥ २ मायियामायाभाजसंज्ञासा मज्जवप्रमद
श्वनासीना २ पञ्चशुपाठजं कृष्णहस्ताः हंगिकपालदोहिनकेच २ मसल
धनुस्वद्वोगखर्पकपालरुलकच्छनाम ॥ विचित्रवक्त्रकच्छकमिरुष्ठाज

गजाङ्गन २१

य शुकमंथि मंथि ना २ लम्बादय लम्बादय आ ल पायलमिमिमि मिवाजंनं
चला मवध न च लामयि ना मपिक मख अ निसुद जी दी मा दत्वा रुक्म सुखदा
ना ने मा मुन मा मु श्री ग अ ध्व जा ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥ ॥
पाग रे च वि ॥ नाल इज मान ॥ गजाजिन उर्द्ध हा ल ध वि या कमल कूलि अ अंग
वा जा २ उ म च क च नि घ ध्व रि भूल वाम ख दा ग क पाल च च ह ॥ ध्रु ॥ श्री सं व
पा शं यं वा ङ लिया रुक्म जाम्बू च च ल ह २ मा च यि च वा प यि या लि च मा या सा सु
रु अ व ल ली ना पा अ प्र व क मू ड वा द ठ हा य ध वि या उ न चो धि च मा ला श वि ध

वामरवर्ष २१

कूलि अ अर्द्ध च नु क टा य न व्या द्य च र्म षट् मू डा ॥ आली उ य न्पा रे च व चा
पा यि च ध्व च कालि जा रि दिन मू डा २ नील लो हि न क न कां बू ज च उ म ख अ
नि री ष आ च च ह २ छ रि सं वी च ध्व च ना य क रि मि च क म हा वी चा ॥ क च अ
सं वा ग वी च वी च ध्व च कुं ज यि स य च सं सा च च ह ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥
वला लि च रा ग ॥ जी ट नाल ॥ वा म ख र्प च द हि न क च नि पा य ल ना प्र च मू ड
माल रू पि ना ॥ ध्रु ॥ ना च यि न क मा नि वं ड या गि नी ॥ मि मि न रु द वी
छि उ व न य वि ल ॥ ध्रु ॥ सु ल सु क म ना दे वी नी ल ऊ न दे वी अ न्य पा रु द

मध्यमम् २३

शिवसा ॥ हननिथी एरुपमिहर्षिममनसा ॥ ॐ ॥ ॥
जागरेचवी ॥ मालमप ॥ ॥ मध्यमम् महामयिकनकजाजिनः पूर्वविदहजलः
जाम्बादीप २ अपजगतावजीउरुचकूचुवनपंचवर्ष पंचजिनव्यापियाध ॥
नमपंचवूद २ विश्वश्रीजिनविश्वहरविश्वरूपपंचमूर्ति ॥ अष्टदीपानलवह
निकजिनमानसाहचरु रुयमिमिचघचघाचचूप ॥ जाम्बवदनसुयाउपदीप जाउ
पदीपपविजानुदीन स्वसनजाउपदीप चउविदिगजुवन नाउपदीप श्रीख
शपच ॥ द्विचदनचपाचियनचचधिययाचिय सुप्रअष्टदलचंवियाच ॥

अष्टमम् २७

अवलजाउदचियसायकंचकाः मधिकपनिधिनिरिलवदयानि ॥ गुचचयथ
हिरुलमरुगनिपाचि रावनाः नचकूरुमउरुलसरुलीप्रजा २ प्रभवपाचि रा
चाधि सुप्रपविप्रोचिना रुवजलनिधिसकलसुरुहन ॥ ॥
जागललिन ॥ मालमप ॥ ॥ अनुरुच नथमा वंकाजारावचलसुप्रसंलाधिमः
ज्ञानामरुमयचन्दामरुचसवाधिरुलदायकं सर्वजिनव्यापिन सरुजकलसंजग
नेमल आधिन अन्यकचु अ रुवसंसाजनासनविचकूचूप ॥ वजापचमानुमयग
धाम्बसंप्रटं सखसंस्थापिपंचपीयूष २ रुंकाचमंडपूष्य अश्वदनवजसंस्थाः

पिताविपाककलमं ॥ घटमस्यनवनकचपराव आरुप्यमशकिनीः
 जलरूपं २ मटिमिसाक्षयशदवगाचकज्ञानसत्वमानिर्मयद्विजकिचयं ॥
 ॥ पाद्यादिआचमनदानपूजसूचयसमयसत्वप्रवर्णिगविमईकल
 सं २ महाभागडवीहूयवाधिविचरूपसमयसत्वज्ञानचक्रकीलनं ॥ ५ ॥
 ॥ ॥ गंधाचरुविवाग ॥ कटिमाव ॥ ॥ ॐ आ ४ हू हू
 हू अंकस्वाहा मंगविशेषउवाचपूजापूजिगपूजसहावकत्वस्वरूपरुवमु
 च ॥ खखरवाहिनअलवल्लिपूजापद्यघघाटय २ विघ्नहन् पंचमियाचम

पंचसहस्रिचः पंचज्ञानसर्ववालना ॥ सर्वजक्रवाकसंरुगपनपिआवअपस
 माचय ॥ जकजकिनीद्वयीअष्टवलिगकगककुच ॥ समया
 चक्रनुमाकसिद्धिचः सर्वसुखसंपदआकिज ॥ ऊथेवऊथेवऊऊथपिक्व ॥
 जिघंथमाहिकारुवंकुच ॥ दानपनि सर्वकार्यसिद्धिच मनाचपसर्वसुख
 पदआकिज ॥ आजससाचनपागकउवन स्वाहायकाचरुवकुच ॥ ५ ॥
 ॥ ॥ गण्डगिचिवाग ॥ चक्रनचिमाच ॥ ॥
 चकीकूडलकाठिचाचकमखलरूपेन गीवचूडनचिचमाचा २ सचचकी

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अत्रमवासधनधवा ॥ कुचरुगवक्त्रकपालधवा ॥ ॥ वरुधंठविषयवायन शुद्धात्रि पदासग
 नावशृगाया ॥ ॥ पुडुमवरुपदमाधव रगवरी ॥ पावन्तु न्रीपूधपदागा ॥ ॥ रावन्तु २
 सर्ववन्धमाचय वरुगगउगायन ॥ ॥ विविधमचवय विद्वविनासन मधिसिधिवयपदागा ॥
 ॥ सत्तात्र चवक्ष सिधंगनधात्रिया ॥ आदिवृधपयमध्वया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जाग चामकात्रि गालमा ॥ ॥ सुवर्नपरावा सुचरुखनाच ॥ निचंनिचुर्ध वपुरवंवदंति ॥ कांते
 पुदक्ष तनूयेसुकेपि ॥ मान्यो ध्वगालं चामकात्रिपयस ॥ ॥ म्यदनिउल अग्नि वायु मधुल उयम-
 स्थिगशी शुभ्यत्र ॥ ॥ नानाचग्रमय उरिगउम्कि ग ॥ गजसस्थिगशी शुभ्यत्र ॥ ॥ नमामि २ श्री
 गुपुतउसत्त अनगगुधनिधि आगया श्विध्वना ० विध्वव्यापिग गुपुनिगवन संपूजिगा ॥ ॥ आकास

वर्धमूरव नयनसुविशाय वरुयन्धवात्रिगा ॥ गिलक शुवर्ध सुध्वरास्कय चत्तमकू गसिलधवा ॥ ॥
 चत्तकधुल सयशिचिवय सत्तयर्क सस्थिगा ॥ चरुयदिपदिगठजत्तादि चत्तमधुलसुसुध्व ॥ ॥
 मधिपमादिग गठोनिविशायवय ॥ गुपुनिचंजनसिधधया २ मधिसिधिवयपदागा सर्वज्ञजिनका
 नरवपदागा ॥ ॥ ॥ ॥ जाग वसन्त गालदुर्जमान ॥ अष्टदयसुवाउ उल्लवयकासिग ॥ श्रीसा
 क मूनिवयध्वानाचना ॥ दहिगशीवकुपानि वामक मल्लपानि नमा श्रीधर्मजाग महामूनि ॥ ॥ दहि
 नखिस्त्रिधयवामक ध्वकापाग ॥ वाचिं गुचिं वयधायि रवन्व्यापिगा ॥ ॥ कात्रेयमानस निर्मल
 दीदय ॥ सत्तउधायन अतयपदागा ॥ ॥ जयम २ सगगवलस्यविग गुक्क शुमयक्ष माऊपदागा ॥ ॥